ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 432-434

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

स्त्री कहानी की स्तंभ'बंगमहिला'

मनीषा यादव

शोध अध्येत्री – हिन्दी विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित् विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ0प्र0), भारत

Received- 08.08.2020, Revised- 13.08.2020, Accepted - 17.08.2020 E-mail: maneeshayadav945028@gmail-com

सारांश : ***बंग महिला को हिंदी साहित्य का प्रथम स्त्री कहानीकार होने का गौरव प्राप्त है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में इन्हें आरंभिक दौर के कहानीकारों के बीच स्थान दिया है । जिसका आधार बनती है उनकी कहानी 'दुलाईवाली' जो १९०७ई में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। जबकि इसके पूर्व ही 'कुंभ में छोटी बहू' कहानी सरस्वती पत्रिका में ही १९०६ ई में प्रकाशित हो चुकी थी। इस कहानी को प्रथम कहानी ना होने के पीछे घटना यह है कि जब इसका प्रकाशन हुआ तब बड़ी चतुराई से लेखिका ने एक फुटनोट लगा दिया, मेरी पूजनीय जननी श्रीमती नीरदवासनी घोष रचित बंग भाषा के एक गल्प का अनुवाद। जोकि निराधार प्रतीत होता है ।विविध समीक्षकों द्वारा 'कुंभ में छोटी बहू' को इनकी प्रथम मौलिक कहानी माना गया है। बंग महिला की यह कहानी परंपरागत चली आ रही पौराणिक रूढ़ियों और विश्वास के विरुद्ध गोता लगाती प्रतीत हो रही है जिसमें तदयुगीन मध्यवर्ग के सामाजिक पारिवारिक संबंध, धार्मिक नैतिक विश्वास, समाज और परिवार में स्त्रियों की स्थिति तथा कुंभ स्नान के समय रेल यात्रा की हालत और कुंभ में दर्दनाक हालात की करुणा पूर्ण अभिव्यक्ति की गई है पहली बार इस कहानी में गांव की अपढ़ स्त्रियों का संवाद भोजपुरी भाषा में प्रस्तुत किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– कहानीकार, आरम्भिक दौर, दुलाईवाली, पौराणिक, रूढ़ियों, विश्वास, तदयुगीन, मध्यवर्ग, दृष्टि।

आंचलिकता का पुट भी पहले पहल इसी कहानी में दिखाई पड़ता है। सामाजिक रूढ़ियों और अन्य धार्मिक आस्था के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि के कारण यह कहानी सहज ही हिंदी क्षेत्र में घटित हो रहे पुनर्जागरण का संकेत देती है। जबकि इस समय जासूसी, तिलस्मी, एय्यारी कहानियों का बोलबाला अधिक था। बंग महिला स्वयं ही जासूसी कहानी के माध्यम से लेखन की शुरुआत की। लेकिन उनका मन मानो एक ही कहानी से उचट गया। इसके बाद से इनकी सभी मौलिक एवं अनूदित कहानियां रूढ़िबद्ध समाज को आईना दिखाने लगी, फिर भी कहीं ना कहीं वह भी सामाजिक रूढ़ियों से जकड़ी दिखाई पड़ती है। कुंभ में छोटी बहू कहानी को ईश्वरी दंड विधान के रूप में प्रकट करते हुए बंग महिला पति और परिवार के विरुद्ध हट पूर्वक अपने मायके वालों के संग कुंभ के मेले में स्नान का पुण्य लूटने की आकांक्षी छोटी बहू के दुष्त्य क्षमा नहीं कर पाती। यह छोटी बहू पति के संग नरक जाने और पद के बिना स्वर्ग तक में न जाने की अभिलाषिणी स्त्री का विलोम रचती है। जिसका भयावह परिणाम उसके सामने प्रकट होता है। हर आस्था मैं चित और पट का खेल रचाते हुए स्त्री को ठोक पीटकर फिट कर देना इस दौर के रूढ़िवादी संकीर्ण लेखन का उद्देश्य रहा है। बंग महिला भी इसका अपवाद नहीं है इन्होंने भी समकालीनो की भांति हिंदुत्व धर्म को श्रेष्ठ साबित किया है। धर्म के प्रति आस्थावान होने के कारण भी कुंभ की छोटी बहू को मृत्यु के हाशिए पर इसलिए खड़ा कर दिया कि वह परिवार की रजामंदी के बगैर आई थी। बंग महिला की दुलाईवाली कहानी इनको एक प्रौढ़ लेखिका के रूप में स्थापित करती है। बंग महिला का प्रथम मौलिक योगदान यह है कि इन्होंने पहली बार आधुनिक ढंग की कहानी लिखी। ऐसा नहीं कि इसके पहले इस ढंग की कहानी नहीं लिखी जा रही थी। लेकिन इन्होंने इन सबसे हटकर यथार्थ का भाव कथोपकथन, आंचलिकता का पुट समाहित करते हुए अलग अंदाज में कहानी का प्रारूप बनाया। कहानी में नया भावबोध नए शिल्प के साथ आए। यह उनकी चिंता का विषय था। इन्होंने देश प्रेम, सामाजिक सुधार की भावना, स्त्री के मन की विभिन्न झांकियों को खूबसूरती से रचा है। रूढ़िबद्ध कहानी के शिल्प को तोड़ने वाली ये प्रथम लेखिका मानी जा सकती है। पात्रों के मुंह से मातृभाषा में संवादों की अभिव्यक्ति और कहानी का समूचा ढांचा खड़ी बोली हिंदी को रखकर उन्होंने आंचलिक भाषा के यथार्थवादी प्रयोग किए। मसलन, दुलाईवाली कहानी का यह वार्तालाप प्रस्तुत है। "अरे इनकर मनई तो नाहीं अइलेन। हो देख हो रोवल करथईन। दूसरी अरे दुसर गाड़ी में बैठा होइ हैं। पहली–दुर बौरही जनानी गाड़ी थोड़े है।" १

इसीप्रकार यथार्थवादी कहानी कला का एक नमूना देखें काशी जी के दशाश्वमेध घाट पर स्नान करके एक मनुष्य बड़ी व्यग्रता के साथ गोदौलिया की तरफ जा रहा था। एक हाथ में एक मैली सी तौलिया में लपेटी हुई भीगी धोती और दूसरे में सुरती की गोलियों की कई डिबियां और सुंघनी की

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

एक पुड़िया थी। उस समय दिन के ग्यारह बजे थे। गोदौलिया की बाईं तरफ एक ओर गली में थोड़ी दूर पर एक टूटे से पुराने मकान में वह जा घुसा। मकान के पहले खंड में बहुत अंधेरा था पर ऊपर की जगह मनुष्य के वासोपयोगीथी नवागत मनुष्य धड़धड़ाता हुआ ऊपर चढ़ गया। वहां एक कोठरी में उसने हाथ की चीजें रख दी और सीता! सीता! करने लगा।"

दुलाईवाली मनोरंजक कहानी के साथ ही अनेक गंभीर परिस्थितियों को कलात्मक रूप में व्यक्त करती है खासकर तदयुगीन समाज की स्त्रियों की स्थिति, स्त्री चेतना और स्त्री सरोकार की भूमिका को प्रतीकात्मक ढंग से रूपायित किया है। बंग महिला ने इस कहानी में घूंघट एवं परंपरागत ड्रेस में सजी औरत की बड़ी सुंदर छवि आकी है–"उनके कमरे के पास वाले कमरे में एक भले घर की स्त्री बैठी थी। वह बेचारी सिर से पैर तक ओढ़े, सिर झुकाए एक हाथ लंबा घूंघट काढ़े कपड़े की गठरी से बनी बैठी थी।"[३] बंग महिला ने इसमें गांव की स्त्री का यथार्थ पूर्ण स्थिति का खाका खींचा है। स्त्री का बेजान निष्क्रिय अशिक्षित एवं अज्ञानी रूप कपड़े की गठरी के बहाने पूरी शक्ति के साथ पाठकों के मन को स्पर्श करता है।

स्वतंत्रता प्रेमी कवियों लेखकों की लेखनी स्वतंत्र भारत के लिए जलाई अलग में घी का काम कर रही थी। जिसकी चिंगारियां देश के कोने कोने में फैल रही थी। ऐसे में पुरुषों के समान वर्चस्व रखने वाली बंग महिला की लेखनी कैसे अछूती रहती। स्वदेश के प्रति सच्ची लगन इनकी कहानियों में प्रस्फुटित होता है। 'भाई– बहन' कहानी में इन्होंने स्वदेशी वस्तुओं को स्वीकार करने तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का संदेश दिया है। इसके साथ ही भारत वासियों की उदासीनता पर तीखी टिप्पणी की "हम लोगों में एक भारी दोष है कि जितना कहते हैं उसका चौथाई भी नहीं करते। यह बात तो सभी कोई कहेंगे कि भारत का बहुत कुछ सुधार करना है। किंतु उसकी बिगड़ी हुई दशा सुधारने में बहुत ही कम मनुष्य दत्तचित्त हुए।"[४] बंग महिला की सबसे बड़ी लेखकीय दुर्बलता यह है कि वह अपनी दृष्टि और सरोकारों को निर्भीक अभिव्यक्ति नहीं दे पाती। 'मन की दृढ़ता' कहानी में हुए मोहन की पत्नी 'रोज' जो कि विदेशी हैं, को स्वेच्छाचारिता के रूप में चित्रित करना चाहती हैं, लेकिन पश्चिमी स्त्री की रूढ़ खलनायिका छवि के विरुद्ध पुरुष रचनाकारों की तरह लुत्फलेते लेते हुए मोर्चा नहीं खोलती बल्कि कहीं स्त्री होने के नाते संवाद करने लगती हैं, उसके दर्द और मन दोनों को पहचान लेती हैं और एक जगह खड़ी होकर उसकी हिमाकत पर दांतो तले उंगली भी दबा लेती हैं।

मोहन के मित्र सोहन के साथ निर्दोष मैत्री संबंध को जीती 'रोज'चरित्र हनन के आरोप पर उबल कर पति को धमका रही हैं" तुम्हारे देश की स्त्रियों की तरह मैं तुम्हारी दासी नहीं जो आज्ञा करो वही मैं मान लूं। मैं तुम्हें सावधान किए देती हूं कि अब कभी मेरी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप न करना।"[५] और एक पत्नी के जीवित रहते हुए भी तलाकशुदा रोज से विवाह करने वाले धोखेबाज सोहन को कानूनी कटघरे में खींचने के लिए कृत संकल्प है। अधिकार के रूप में भय मिश्रित श्रद्धा एक हसरत और कसक बनकर हर दामित अस्मिता को मुक्त के लिए उकसाती है। क्या बंग महिला उसका अपवाद रहीं होंगी? क्या महिमा मंडल के सारे तामझाम के बावजूद वह पुरुष के सुर में सुर मिलाकर स्त्री की श्रेष्ठता की बात हृदय की भीतरी गहराइयों से स्वीकार करती रही होंगी? बंग महिला की साहस हीनता अथवा संकीर्ण दृष्टिकोण युग की मांग कह कर सिद्ध नहीं किया जा सकता और वह भी तब जब उनसे ५ वर्ष पहले 'अज्ञात हिंदू महिला' पंडितों और धर्मानुयायियों को सबक सिखा चुकी थी। पतिव्रता धर्म को 'मतलबी धर्म' कह कर बहिष्कृत कर देना जिस नैतिक साहस की अपेक्षा रखता है, वह शीलवती कुलवधू की भूमिका निभाती बंग महिला में नहीं। बंग महिला प्रारंभिक कहानीकारों में सर्वाधिक संवेदनशील हैं। युगीन चेतना और तत्कालीन साहित्य धर्मिता के प्रति समर्पित होने के कारण इनमें लेखन की सर्वाधिक मौलिकता पाई जाती है। बंग महिला ने केवल उन्हीं रचनाओं का अनुवाद किया है जो सामाजिक समस्याओं का चित्रण कर रहे थे । इन्होंने स्वप्न–प्रसंग, यात्रा–दर्शन, कल्पना– चित्रण, आत्मकथन, विरहानुभूति, प्रेम की आदर्शात्मक भावुकता एवं ऐतिहासिक घटनाओं को भी कहानी कथ्य के रूप में स्वीकार नहीं किया। जबकि समकालीन कहानीकार इस प्रकार की घटनाओं को अपनी कहानी का आधार बना रहे थे। बंग महिला के केवल दो कहानियों 'दतिया' और 'अपूर्व प्रतिज्ञा पालन' में ऐतिहासिकता का पुट मिलता है। परंतु 'दालिया' इतिहास वृत्तन होने के बावजूद नारी साहसिकता और उसके एक कमजोर पक्ष की ओर संकेत करता है जो उस समय मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नया विषय था। इस प्रकार 'अपूर्व प्रतिज्ञा पालन' में हिम्मत सिंह के त्याग एवं बलिदान के परिप्रेक्ष्य में वीर भाव का सामाजिक प्रतिफल किया गया था। इन्हीं विशेषताओं के कारण शायद दोनों कहानियों के प्रति बंग महिला का आकर्षण रहा हो ।

सौतेली मां के क्रूर अत्याचार को व्यक्त करते इनकी कहानी है 'मातृहीना'। जो कि उस समय की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई थी। जिससे बंग महिला ने अपनी कहानी के माध्यम से नए ढंग से व्यक्त किया है। तारा जब महीने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ही भर की थी तभी उसकी मां मर गई थी, लेकिन उसे यह एहसास तब हुआ जब उसकी मां जैसी बुआ स्वाभिमान के कारण उस घर से निकल जाती है। बंग महिला इस कहानी के केंद्र में उस बुआ को रखा है जो कि बाल विधवा के साथ ही स्वाभिमानी तथा अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है। वह सब सहन कर सकती है यहां तक तारा को भी छोड़ देती है लेकिन अपने स्वाभिमान पर आँच बर्दाश्त नहीं है। बंग महिला ने यहां समाज रूपी तराजू के दो पलड़े स्त्री और पुरुष में समानता ना दिखा कर उस समय की फैली कुरीतियों के हिसाब से ही दोनों को तौल दिया है। जहां श्यामा को बाल विधवा होने के कारण उसे पुनः विवाह का अधिकार नहीं देती वहीं श्यामा का भाई गोविंद बाबू 30 साल की उम्र में एक बच्ची का पिता होने के बावजूद दूसरा विवाह रचाता है। यहां बंग महिला पुरुषवादी द्वारा बनाए गए सामाजिक नियमों के रंग में रंग गई। यदि कड़वे सत्य को नंगी आंखों से देखकर उतने ही कड़वे नंगे रूप में व्यक्त करने का नैतिक हौसला उनमे होता तो वह भी ज्योतिबा फूले, ताराबाई, रमाबाई, अज्ञात हिंदू महिला की तरह सामाजिक कुरीतियों तथा धर्म ग्रंथों को फूंक कर 'मनुष्य धर्म' की स्थापना करने पर बल देती।

बंग महिला स्त्रियों को ही सदाचरण पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। उनका मानना है कि लड़कियों को लड़कों की अपेक्षा सहनशील, विनम्र, गृह कार्य आदि में निपुण होना चाहिए। भाई–बहन कहानी में "सुंदर पर साहब की इस बात का कुछ भी प्रभाव ना पड़ा क्योंकि सुंदर की माँ प्रायः उससे कहा करती थी बेटी तुम भैया से छोटी होना तुम्हें सब चीज में भैया से कमती हिस्सा लेना चाहिए।"[६] यहां बंग महिला स्त्री–पुरुषों को दो भागों में करती दिखाई देती है। "जिसके ह्रदय में संतोष है उसी ने सब कुछ भर पाया। साहब का सब है और मेरा कुछ नहीं है। यह बात उसे कभी दुख नहीं दे सकती निज अवस्था में संतुष्ट रहना और उसी के अनुसार चलना बुद्धिमानों का काम है।"[७] निजी अवस्था में क्यों स्त्री ही संतुष्ट हो? क्यों पुरुष ना हो? आज प्रश्नों के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने वाली बंग महिला कहीं ना कहीं सामाजिक रूढ़ियों में जकड़ी दिखाई पड़ती है। ऐसे में अहम मनोवृति का प्रश्रय देने वाली ताकत के हाथ की डुगडुगी बनकर बंग महिला अपनी ही उपादेयता पर प्रश्नचिन्ह लगा देती है।

बंग महिला यदा–कदा कमजोर कड़ी होने के बाद भी नारियों को रूढ़ तथा जड़ परंपराओं के शिकंजे में कसने वाली शास्त्री व्यवस्थाओं को नकारती हुई स्त्री शिक्षा का नया माहौल बनाया। 'मन की दृढ़ता' कहानी के माध्यम से उन्होंने जहां एक और स्वेच्छा से पति चुनाव की बात की वहीं दूसरी तरफ पति के धोखा देने पर तलाक देने और यहां तक की पत्यन्तर करने के अधिकार की मांग पुरजोर की। हिंदी में आंचलिक साहित्य के जनक के रूप में फणीश्वर नाथ रेणु को माना जाता है जबकि इसका पुट हमें बंग महिला की रचनाओं में अर्थात बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में ही आसानी से देखने को मिल जाता है। लेकिन वहां से एक अविरल अखंडित परंपरा शुरु ना हो पाने के कारण बंग महिला को आंचलिकता के क्षेत्र में वह स्थान ही नहीं मिल पाया जो कि मिलना चाहिए। 'ह्रदय की परीक्षा' कहानी की नायिका 'सरला' पतिभक्ति की मिसाल पेश करती है और कदम कदम पर तुनक मिजाज अहम निष्ठ स्वार्थी पति को प्रेम से ही सही सबक सिखाने में पीछे नहीं हटती।

बंग महिला हिंदी कहानी लेखन की विचारधारा संपन्न आदि महिला है। उन्हीं की बनाई जमीन पर प्रेमचंद्र जैसे कहानीकार खड़े हुए प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी बंग महिला के भाई–बहन कहानी से साम्य रखती है यदि बंग महिला की कहानी बाद की होती तो पुरुषवादी समाज को कहते किंचित भी देर नहीं लगता कि बंग महिला की यह कहानी प्रेमचंद की कहानी की नकल है। हिंदी कहानियों के लिए नया वस्त्र विधान करने रचना को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अभिनव मोड देने और भाषा का समुचित प्राण सत्ता के साथ संचारित करने में बंग महिला का कोई जोड़ नहीं।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं बंग महिला बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशकों की प्रथम छापा मार लेखिका है। उन्होंने अपने आक्रामक लेखन द्वारा पुरुष सत्तात्मक समाज की चूलें ढीली कर दी। आचार्यों द्वारा आरोपित चारित्रिक लांछनों से डरने वालों में नहीं थी इससे वह और भी नए तेवर के साथ नारी मुक्त की लड़ाई में मजबूत नींव बनी। जिसे पुरुषवादी समाज हिलाना सका। "सीमांतनी उपदेश और स्त्री पुरूष तुलना के मुकाबले बंग महिला की रचनाओं से स्पष्ट है बुनियादी तौर पर वह स्त्री संबंधी परंपरागत दृष्टिकोण की समर्थक थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्मिता तिवारीः बंग महिला रचना समग्रः पृष्ठ संख्या ४६
2. अस्मिता तिवारीः बंग महिला रचना समग्रः पृष्ठ संख्या ४६
3. अस्मिता तिवारीः बंग महिला रचना समग्रः पृष्ठ संख्या ४६
4. अस्मिता तिवारीः बंग महिला रचना समग्रः पृष्ठ संख्या ६०

*****